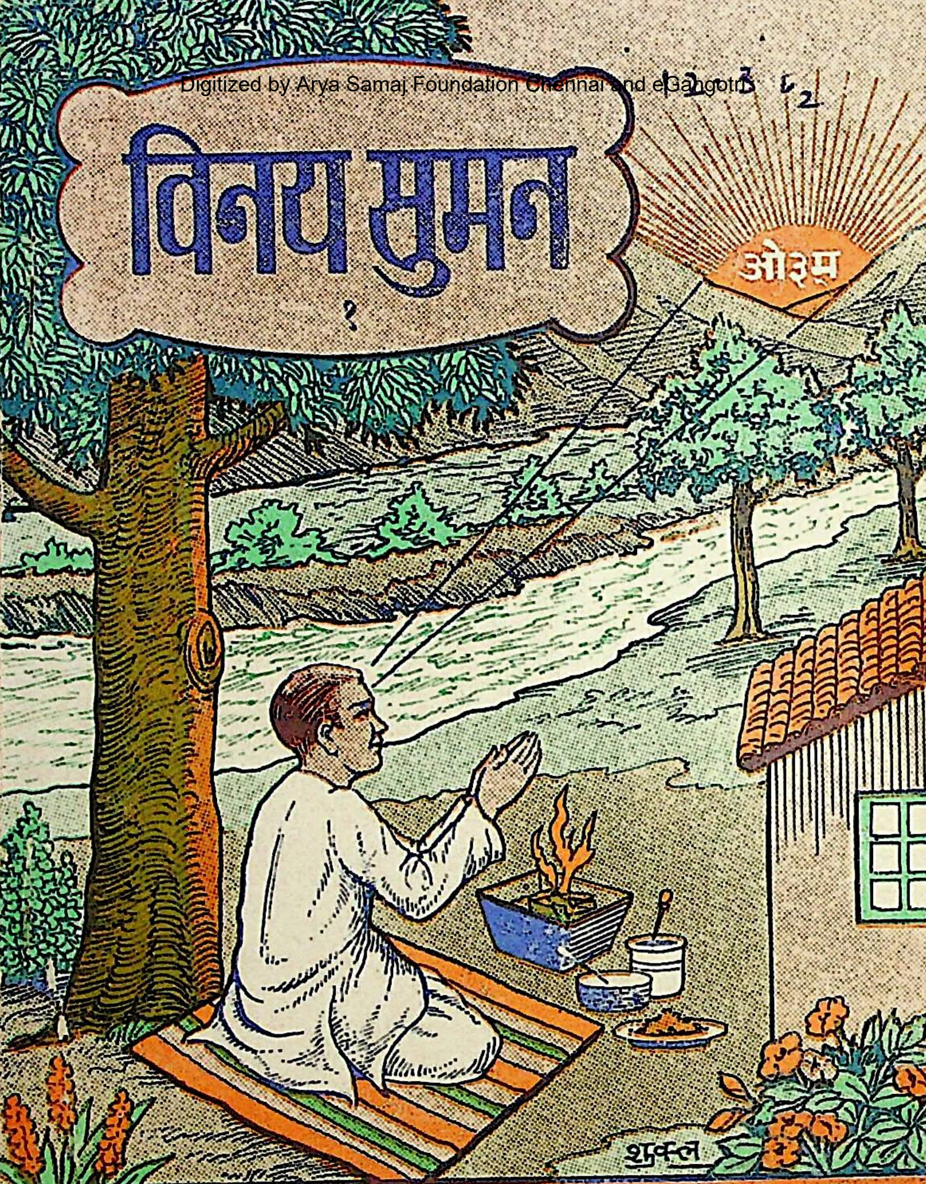
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



प्रभु शरण में बैठा भक्त, विनय कर रहा है भक्त॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

"श्रद्धा साहित्य प्रकाशन का सप्तम् पुष्प"

विनय-सुमन

[भाग-१]

लेखक —

रामप्रसाद वेदालंकार

रीडर एवं अध्यक्ष, वेद-विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पता—

रामप्रसाद वेदालंकार

कर्म कुटीर, आर्य नगर, ज्वालापुर

जि० सहारनपुर, (उ.प्र.)

पिन–249407

प्रकाशक—

"श्रद्धा साहित्य प्रकाशन"

द्वितीय संस्करण) दयानन्दाब्द–१५६ (सम्वत् २०३७

४००० प्रतियां) (जनवरी १९८१

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्र. सं.	विषय			पृष्ठ संख्या
१	भूमिका			३
२	'समर्पण			४
३	विनय संख्या	१	अग्ने व्रतपते······	५
४	,, ,,	२	उत नः सुभगां······	८
५	,, ,,	३	उप त्वाग्ने दिवे······	१३
६	,, ,,	४	मा प्रगाम पथो······	१७
७	,, ,,	५	इमं मे वरुण······	२२
८	,, ,,	६	यदङ्ग दाशुषे······	२७
९	,, ,,	७	तेजोऽसि तेजोमयि ·····	३३
१०	,, ,,	८	दृते दृंह मा···	४०
११	,, ,,	९	त्वं नः सोम·····–	४४
१२	,, ,,	१०	शन्नो देवीरभिष्टये······	५१

मूल्य—"श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" से सरल सुबोध रूप में प्रकाशित होने वाला वैदिक साहित्य दानी महानुभावों के दान से प्रकाशित होता है और सुपात्रों को प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना ही इस का मूल्य है।

जो महानुभाव इस सरल सुबोध वैदिक साहित्य को उपयोगी समझ कर मंगवाना चाहें वा इसमें अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें वे कृपया लेखक के निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें। न्यून से न्यून १० रु० तक की राशि किसी एक पुस्तक की दान सूची में प्रकाशित की जायेगी, शेष फुटकर रूप में।

प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार

कर्म कुटीर, आर्य नगर, ज्वालापुर

जिला सहारनपुर (उ० प्र०) Pin-249407

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्राप्त आर्य
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" का प्रथम पुष्प प्रार्थना सुमन भाग - १" पुस्तक अप्रैल १६७६ में स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती" की पुण्यस्मृति में प्रकाशित हुई और व्यास आश्रम हरिद्वार के "साधना शिविर" की पूर्णाहुति के अवसर पर प्रसाद-रुप में बांटी गई।

इस पुस्तक के बांटने पर कुछ ही दिनो के उपरान्त यह जिज्ञासा होनी आरम्भ हो गई कि इस का द्वितीय भाग कब छपेगा? मैं बराबर यही उत्तर देता कि 'जबप्रभु की कृपा होगी'। वहुत शीघ्र ही 'पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु' जी की पुण्य स्मृति में प्रार्थना सुमन का द्वितीय भाग प्रकाशित हो गया। द्वितीय भाग के प्रकाशित होने पर भी "प्रार्थना सुमन भाग-१" कीभी मांग बराबर बनी रही,क्योंकि वह पुस्तक बहुत जल्दी समाप्त हो गयी। अतः स्वाध्यायशील महानुभावों के आग्रह पर उन्हें पुनः श्रद्धा साहित्य प्रकाशन की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

कई प्रकार के प्राणी संसार में रहते हैं। अतः सबकी अपने-२ ढंग की रुचि और मांग रहती हैं। इन पुस्तकों को बड़ी श्रद्धा और प्रेम से पढ़ने वाले महानुभावों में से भी कई से सुनने को यह मिला कि "वैसे हमारे लिए तो ये प्रार्थना पुस्तकें ठीक हैं, पर कई ऐसे महानुभाव हैं जिनके पास समय तो कम होता है पर वे रुचि बहुत रखते हैं। यदि उन के लिए कोई छोटी-२ अर्थात संक्षिप्त दो-दो ढाई-ढाई पृष्ठ तक की प्रार्थनायें प्रकाशित हो जाये तो बड़ा उत्तम रहेगा।" उन के इस कथन के अनुसार "विनय सुमन भाग-१ और भाग-२ पुस्तकें श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" द्वारा प्रकाशित हुईं। परन्तु जहां अब प्रार्थना सुमन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग-१ और भाग-२ समाप्त हो गए हैं वहाँ विनय सुमन भाग १, २, भी समाप्त हो गए हैं। अतः इनका भी बहुत शीघ्र ही द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। सो इसी व्यवस्थानुसार "श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" द्वारा प्रकाशित "विनयसुमन भाग-१ तुम्हारे हाथों में है, इन विनय-सुमन आदि प्रार्थना पुस्तकों में से प्रति दिन सन्ध्या-उपासना आदि के उपरान्त कोई श्रद्धा पूर्वक एक प्रार्थना को पढ़ लिया करे तो मुझे विश्वास है कि उस को बड़ा लाभ होगा। इस प्रकार यदि धर्म-प्रेमी प्रभुप्रेमी महानुभाव इन प्रार्थना पुस्तकों से लाभ उठाते रहे तो इससे लेखक अपने को कृतार्थ समझेगा।

विनीत — रामप्रसाद वेदालङ्कार



समर्पण

जिस परपिता परमात्मा की अपार कृपा एवं अपने पूजनीय गुरुजनों के उदार हृदय से प्रदान किये हुए ज्ञान और आशीर्वाद के आधार पर "श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" का यह सप्तम् पुष्प - "विनय-सुमन" मैं आपके करकमलो तक पहुंचा सका, उन्हीं के पावन चरणों में मेरा यह अल्प प्रयास समर्पित है

विनीत—रामप्रसाद वेदालंकार
रीडर एवं अध्यक्ष वेद विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० हरिद्वार।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० १

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ यजु० १.५ ॥

अन्वयः—व्रतपते अग्ने! व्रतं चरिष्यामि, तत् शकेयम्, मे तत् राध्यताम् । इदम् अहम् अनृतात् सत्यम् उप एमि ।

अन्वयार्थः—(व्रतपते अग्ने !) हे व्रतों के पालन करने वाले एवं व्रतों की रक्षा करने वाले ज्ञान स्वरूप परमेश्वर ! (व्रतं चरिष्यामि) में व्रत करूंगा (तत् शकेयम् उसके पालन करने में मैं समर्थ होऊं (में तत् राध्यताम्) मेरा वह व्रत सिद्ध होवे, सफल होवे । मेरा वह व्रत (इदम्) यह है कि (अहम् अनृतात् सत्यम् उप एमि) मैं अनृत से—असत्य से अर्थात् झूठ से पृथक् होकर सत्य को प्राप्त करता हूं वा करना चाहता हूं ।

(व्रतपते !) हे व्रतों के स्वामी परमेश्वर ! आप व्रतपति हैं, व्रतों का पालन करने वाले हैं । जो आप के व्रत हैं, नियम है, व्यवस्थायें हैं, उन का आप भली-भान्ति पालन करते हैं । इस संसार में शाश्वत काल से चली आ रही सभी प्रजाओं को आप अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही जाति, आयु और भोग प्रदान करते हैं । प्रभुवर ! आपकी न्याय व्यवस्था के सम्मुख न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है, न कोई बच्चा है और न कोई बूढ़ा है, न कोई गरीब है और न कोई अमीर है,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कोई निर्बल है और न कोई बलवान् है, सभी समान रूप से आप के इस विशाल साम्राज्य में अपने-अपने कृत्यों के अनुरूप ही अच्छा बुरा या न्यूनाधिक फल पाते रहते हैं।

हे व्रताधिपति प्यारे प्रभो! आपके न्यायालय में न तो परिचितों की ओर कभी कोई विशेष ध्यान दिया जाता है और न ही अपरिचितों की कभी अवहेलना की जाती है। वहां न तो रिश्वत चलती है और न ही रिश्तेदारी चलती है। आपके दरबार में न तो किसी वकील की आवश्यकता होती है और न ही किसी गवाह की, क्योंकि सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ होने से आप प्रत्येक को भीतर-बाहर से भली-भान्ति जानते हैं।

परम पिता परमेश्वर! जैसे आप के अपने व्रत हैं, नियम हैं, व्यवस्थायें हैं, जिनका कि आप निश्चल रूप से पालन करते हैं, वैसे ही आपने हमारे लिए भी व्रत बनाए हैं, नियम निश्चित किये हैं, व्यवस्थायें बांधी हैं। अब यदि हम श्रद्धा-पूर्वक उन व्रतों का, उन नियमों का, उन विधि-विधानों का पालन करेंगे तो निश्चित रूप से हम हिंसित नहीं होंगे-हम पीड़ित नहीं होंगे, वरन् हम हर प्रकार से समुन्नत होंगे, सुखी होंगे, प्रसन्न होंगे।

हे व्रतशील! हे व्रत रक्षक ज्ञान प्रकाश के पुञ्ज प्रभो! इधर जब हम आप व्रतपति को देखते हैं और

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधर जब आप के उन अनन्य भक्तों-सच्चे-सुच्चे साधकों-प्रिय उपासकों को देखते हैं, जो बड़ी लग्न से, बड़ी श्रद्धा से, दृढ़तापूर्वक आप के बनाए हुए व्रतों का-नियमों का निरन्तर पालन करते रहते हैं, भले ही ऐसा करते हुए उन्हें बड़ी से बड़ी हानि क्यों न उठानी पड़े, यहां तक कि साक्षात् मृत्यु तक का भी आलिङ्गन क्यों न करना पड़े, तो भी वे व्रतों से हटते नहीं, नियमों से टलते नहीं। ऐसी अवस्था में आपको देख-देख कर तथा उन दृढ़व्रती महापुरुषों को देख-देख वा सुन-सुन कर हमारे हृदय में भी उत्साह उत्पन्न होता है कि हम भी व्रत करें। और इसी उत्साह में आकर ही हम झट कह उठते हैं कि हम भी व्रत करेंगे, व्रत का पालन करेंगे। उस व्रत का पालन करने में हम समर्थ होवें। प्रभु देव ! आप हमारे उस व्रत को सफल और सुफल करें। हमारे उस व्रत का उद्देश्य केवल एक ही है और वह यह है कि हम अनृत से पृथक् हटकर सत्य को प्राप्त होवें, अविद्या से पृथक् होकर विद्या-विज्ञान को प्राप्त करें, मृत्यु से हटकर अमरता को प्राप्त करें। हे ज्ञान स्वरूप प्रभु देव ! हमारी टेर को आप सुनो, हमारी पुकार को आप सुनो और हर प्रकार से हमें सफल करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म्

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० २

ओ३म् उत नः सुभगां अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः ।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।। ऋ० १-४-६ ।।

अन्वयः—दस्म ! अरिः उत न सुभगान् [वोचेयुः] कृष्टयः वोचेयुः । [वयम्] इन्द्रस्य इत् शर्मणि स्याम ।

अन्वयार्थः—(दस्म !) हे पाप प्रणाशक दर्शनीय देव ! (अरिः उत नः सुभगान् वोचेयुः) शत्रु तक भी हमें सौभाग्यशाली कहें यद्वा हमारे गुणों की चर्चा करें, (कृष्टयः वोचेयु) सामान्य जन तो कहें ही । परन्तु फिर भी हम (इन्द्रस्य इत् शर्मणि स्याम) तुझ इन्द्र की - तुझ परमेश्वर की ही शरण में-आश्रय में-सुख में वर्तमान रहें ।

(दस्म!) हे पाप प्रणाशक प्रभुवर ! तू हमारे पाप-तापों का उपक्षय करने वाला है, पाप-पीडाओं का विनाश करने वाला है, आधि व्याधियों को समाप्त करने वाला है, दुर्विचार, दुराचारों को क्षीण करने वाला है, दुर्गुण-दुर्व्यसनों को दूर करने वाला है, इसी से तू 'दस्म' कहाता है-पाप ताप विनाशक कहलाता है, इसी कारण तू दस्म अर्थात् दर्शनीय भी है, प्रापणीय भी है ।

हे दस्म ! हे दर्शनीय देव ! इस संसार में भी यदि कोई हमारे पाप-तापों को हर लेता है, हमारे दुखः-दर्दों को दूर कर देता है, हमारे दुर्गुण-दुर्व्यसनों को समाप्त

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देता है तो ऐसा पाप-ताप विनाशक व्यक्ति हमारे लिये स्नेह और सम्मान का, सेवा और सत्कार का, श्रद्धा और शुश्रूषा का पात्र बनकर सब प्रकार से दर्शनीय हो जाता है, पूजनीय हो जाता है। फिर हे प्रभुवर ! तू तो हमें सहज स्वभाव से सर्वथा निःस्वार्थ भाव से भी उच्चतम स्तर से जब भीतर-बाहर से धो रहा है, अन्दर-बाहर से पाप-ताप से मुक्त कर रहा है तो फिर भला तुझ से बढ़कर हमारे लिये द्रष्टव्य और प्राप्तव्य, दर्शनीय और प्रापणीय और कौन रह जायेगा ? अर्थात् कोई नहीं। अतः हे दुःख विनाशक दर्शनीय एवं प्रापणीय प्यारे परमेश्वर ! तेरी अनुपम कृपा से हम इतने पवित्र हो जाएं, हम इतने ऊंचे उठ जाएं, हम इतने अच्छे हो जाएं, हम इतने दिव्य बन जायें, हम इतने महान् बन जायें, हम इतने सुन्दर गुण कर्म और स्वभावों से देदीप्यमान बन जायें कि (अरि उत नः सुभगान् वोचेयुः) शत्रुतक भी जोकि हमारे सम्बन्ध में स्नेह और सम्मान सूचक शब्द कहने में अत्यन्त कठोर वा अत्यन्त कंजूस हैं, वे भी हमें सु-भग वाले अर्थात् सुन्दर षड्विध ऐश्वर्यों वाले कहें। अर्थात् ऐसे विपरीत जन तक भी हमारी अच्छाईयों को हमारे सौभाग्यों को कहें और कहने में सुख अनुभव करें (कृष्टयः वोचेयुः) सामान्य जन तो कहें ही और कहने में सुख अनुभव करें भी।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

हे दर्शनीय दिव्य देव ! हमारी सरलता, हमारी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्कपटता, हमारी निश्छलता, हमारी धार्मिकता, हमारा यश, हमारी कीर्ति, हमारी श्री, हमारी शोभा, हमारी आभा, हमारी प्रभा, हमारा ज्ञान, हमारा ध्यान, हमारा वैराग्य, हमारी श्रद्धा, हमारा विश्वास आदि भग-ऐसे सुभग बन जायें-ऐश्वर्य ऐसे सुन्दर ऐश्वर्य बन जायें कि शत्रुओं तक के हृदयों में वे गढ़ कर रह जायें, उनके हृदयों तक में वे अपना स्थान बना कर रह जायें; और उन को उन सुभगों का, उन अच्छाईओं का; उन सद्‌गुणों का बखान करने को मुखरित कर डालें तथा उनको हमारा ऐसा प्रेमी-हमारा ऐसा घनिष्ट बना डालें कि जिसका वर्णन न किया जा सके। सामान्य जन तो हमारी उन अच्छाईओं के, हमारे उन सुभगों के, हमारे उन सुख सौभाग्यों के बखान करने में मुखरित होंगें ही।

परन्तु हे दस्म ! हे दर्शनीय परमेश्वर ! तेरी कृपा से, तेरे पावन अनुग्रह से इस यश को, इस स्नेह और सम्मान को पाकर भी हम इसमें कहीं डूब न जायें, इसे पाकर कहीं फूल न जायें और इसमें विभोर होकर कहीं तुम्हें सर्वथा भूल न जाएं। अतः···

हें नाथ! (इन्द्रस्य इत् शर्मणि स्याम) हम तुझ इन्द्र-तुझ परमेश्वर ही की शरण में- आश्रय में सदा वर्तमान रहें। क्योंकि संसार की शंसा-प्रशंसा पर, संसार के मान-सम्मान पर, संसार के सेवा-सत्कार पर जीना-निर्भर करना तो कोई

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम बात नहीं है। वास्तव में जीवन तो वही है जो तेरे पावन संरक्षण में बीते, तेरे पावन चरणों में बीते। संसार के लोगों के मान-सम्मान और सेवा-सत्कार में जो फूल सकता है वह अपमान और तिरस्कार में कभी कुम्हला भी सकता है, दुःखी और उदास भी हो सकता है। इसीलिए हमें तो तेरी ही शरण चाहिये, तेरा ही आश्रय चाहिये जहां सब अवस्थाओं में आनन्द ही आनन्द है। फिर संसार वाले तो केवल हमें अवर ऐश्वर्य दे सकते हैं, केवल संसार में उपलब्ध हो सकने वाला ऐश्वर्य-धन-वैभव, मान-सन्मान, सेवा-सत्कार, श्रद्धा एवं प्यार दे सकते हैं जबकि जिस तुझ इन्द्र का हमने आश्रय लिया है, जिस तुझ इन्द्र की हम शरण में आए हैं, वह (इदि) परमैश्वर्य) तू इन्द्र हमें अवर अर्थात् सांसारिक ऐश्वर्य के साथ-साथ परमैश्वर्य परमशान्ति-परमसन्तोष-परमतृप्ति-परमानन्द भी प्रदान कर सकता है, जिसके पा लेने पर फिर हमारे लिए कुछ प्राप्तव्य शेष नहीं रह जाता। इस लिए हम तुझ इन्द्र को परम सहारा-परम आश्रय समझ-कर तुम्हारा ही आश्रय लेना चाहते हैं। उपनिषद् भी तुझ दिव्य आश्रय की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं—

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ कठोप० २.१७ ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही उत्तम आश्रय है, यही महान् आश्रय है। तात्पर्य यह है कि सब से बड़ा यदि कोई सहारा है, सब से परम यदि कोई सहारा है तो वह केवल मात्र यही है। इस आश्रय को जानकर एवं अपना कर ही मनुष्य ब्रह्मधाम में महिमा को प्राप्त कर सकता हैं।"

इसीलिए ही तो हे जगत् सम्राट्, हे हृदय सम्राट् परमेश्वर ! हमने तुझ उत्तम आश्रय को पकड़ा है-हम ने तुझ परम सहारे को पकड़ा है। नाथ ! तेरे दर से भला कौन सा ऐसा ऐश्वर्य है, कौन सा ऐसा सुख सौभाग्य और परम सौभाग्य है जो हमें उपलब्ध नहीं हो सकेगा ? अर्थात् सर्वविध ऐश्वर्य हमें सहज से ही प्राप्त हो जायेगा। इसी आशा और विश्वास से ही तो हम तेरी शरण में पड़े हुए हैं, तेरे चर्णों में ध्यानावस्थित हुए हैं। नाथ ! कभी तो सुनेंगे ही आप हमारी पुकार को, कभी तो सुनेंगे ही नाथ आप हमारी पुकार को और निहाल करेंगे आप हमारी कुटिया को—

ओ३म्ः शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ३

ओ३म् उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ।। ऋ० १-१-७ ।।

अन्वयः—अग्ने! वयं दिवे दिवे दोषावस्तः धिया नमः भरन्तः त्वा उप-एमसि ।

अन्वयार्थः—(अग्ने !) हे ज्ञान प्रकाश के पुञ्ज परमेश्वर ! (वयं दिवे दिवे दोषावस्तः) हम उपासक प्रति-दिन सायं प्रातः (धिया नमः भरन्त) बुद्धि एवं आचरण पूर्वक अपने में नमन-नम्रता-कृतज्ञता को धारण करते हुए (त्वा उप-एमसि) तेरे समीप आ रहे हैं, तेरी शरण में आ रहे हैं।

हे प्रभो ! आप अग्नि के समान प्रकाशमान हैं, इस-लिये जो आप की शरण में आ जाता है उसे भी आप अपने ज्ञान प्रकाश से प्रकाशमान कर देते हैं। हे अग्नि-सम दिव्यदेव! आप अग्रणी हैं, इसलिये आप को हृदय से जो अपना अग्रणी अगुआ—नेता मान लेता है उसके आप अगुआ बनकर उसको सब प्रकार से आगे ले चलते हैं, जिस के परिणाम स्वरूप वह उपासक भी आपका सच्चा अनुयायी बनकर सफलता पूर्वक अन्यों का नेतृत्व करने में समर्थ बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभुवर ! आप अग्नि-सम पवित्र हैं अतः अपनी शरण में आए हुए को भी आप पवित्र कर देते हैं। आप तेजस्वी हो इसलिये जो आपकी शरण में आ जाता है उसे भी आप तेजस्वी बना देते हो। इससे फिर उसे पाप-ताप छू नहीं पाते।

हे अग्नि-देव ! हे प्रकाशस्वरूप प्यारे प्रभुवर ! हम उपासक दिनोदिन आप के समीप आ रहे हैं—सान्निद्ध्य में आ रहे हैं। हम दिन प्रतिदिन ही नहीं अपितु प्रतिदिन में भी प्रति सायं तथा प्रति प्रातः आपके सन्निकट आ रहे हैं।

हे जगदीश ! हम सोचते हैं कि हमारे जीवन में कोई ऐसा दिवस न रहे, दिवस में भी कोई ऐसी प्रभात न रहे, कोई ऐसी शाम न रहे जिस में कि हम आप से दूर पड़े हुए हों। प्रतिदिन प्रातः सायं हम आप की शरण में ही दौड़े चले आ रहे हों। प्रभो! हम श्रद्धा भक्ति एवं उत्साह को अपने में भर-भर कर सर्वविध विघ्न बाधाओं को पैरों तले रोंधते हुए तुम्हारी ओर अबाध गति से चले आ रहे हों।

हे प्यारे एवं सब जगसे न्यारे परमात्मन् ! हम प्रतिदिन प्रातः सायं धिया-ज्ञान एवं कर्मपूर्वक, बुद्धि एवं आचरण पूर्वक आपकी ओर सोत्साह आ रहे हैं। जिस बात को हमारी बुद्धि स्वीकार करती है हम उसका आचरण करते हुए आपके पावन स्नेह एवं आशीर्वाद के सच्चे पात्र

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनने को चले आ रहे हैं। नाथ ! आपकी कृपा से यह गति प्रगति निरन्तर चलती रहे ताकि हम आप तक पहुँच सकने में समर्थ हो सकें।

हे परमपिता परमेश्वर ! आप की शरण में आते हुए हम आप के लिये क्या भेंट लेकर आयें? बहुत कुछ सोचने विचारने पर भी हमें कोई ऐसी वस्तु दिखाई नहीं दी जिसे कि हम आप के चरणों में लाकर श्रद्धापूर्वक धर सकें। यह धनैश्वर्य, यह वस्त्राभूषण,यह फल-फूल, यह तन मन आदि सभी कुछ आपका ही तो है, इसलिये हम इसे क्या भेंट में धरें।

इस प्रकार बहुत कुछ सोचने विचारने और देखने भालने पर भी हमें कोई ऐसी वस्तु नहीं दिखाई दी जो कि हम आप की शरण में आ कर भेंट स्वरूप धर सकें। जो कुछ दीखा सो सब कुछ आप का ही दीखा। और वह भी आपने हम पर अनुग्रह करके हमारे सुख सौभाग्य के लिए हमें प्रदान किया हुआ है।

हे दिव्य देव! आपके इन अनुपम अनुग्रहों को, दिव्य उपकारों को, दिव्य देनों को देख-देख कर, सुन-सुन कर हमारा सिर आपकी शरण में ऐसा झुक गया कि फिर उठाए न उठ सका। प्रभुवर ! बस हम इस नमन को अर्थात् कृतज्ञता पूर्वक सहज स्वभाव से हुए हुए इस नमन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने में धारण करते हुए आप की भेंट स्वरूप लाए हैं। अतः हे पावन परमेश्वर! आप इन अपने कृतज्ञ भाव से ओत-प्रोत हम उपासकों की श्रद्धा भक्ति एवं उत्साह पूर्वक लाई हुई इस भेंट को स्वीकार करो और हमारा सब प्रकार से कल्याण करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ४

मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः ।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥
ऋ० १०-१५-१ ॥ अथर्व १३-१-५६ ॥

अन्वयः—इन्द्र ! वयं पथः मा प्रगाम । सोमिनः (वयम्) यज्ञात् मा (प्रगाम) । अरातयः नः अन्तः मा स्थुः ।

अन्वयार्थः—(इन्द्र !) हे परमैश्वर्यवान् प्रभो ! (वयं पथः मा प्रगाम) हम सत्पथ से कभी विचलित न हों । हे परमेश्वर ! (सोमिनः यज्ञात् मा प्रगाम) ऐश्वर्यशाली होकर हम यज्ञादि शुभ कर्मों से कभी विचलित न हों (अरातयः नः अन्तः मा स्थुः) यज्ञादि शुभ कर्मों में बाधा पहुँचाने वाले अराति - भाव - अदान - भाव-स्वार्थ-भाव या काम क्रोध आदि शत्रु हमारे भीतर न रहें ।

हे इन्द्र ! हे ऐश्वर्यों के भण्डार परमेश्वर ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तू इन्द्र है, ऐश्वर्यों का स्वामी है, ऐश्वर्यों का ही नहीं परमैश्वर्यों का भी तू स्वामी है । संसार के सर्वविध ऐश्वर्य तुझ से ही प्रवाहित होते रहते हैं । सांसारिक अवर ऐश्वर्य ही नहीं वरन् परमैश्वर्य के-आध्यात्मिक अनुपम ऐश्वर्य के—परमानन्द के दिव्य स्रोत भी तो तुझ से ही प्रवाहित होते रहते हैं । प्रभुवर ! यह जानते हुए भी हम यहां तुझ से ऐश्वर्यों की-धन वैभवों

CC-0. In Public Domain. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रार्थना नहीं करते, सुख सौभाग्यों की अभ्यर्थना नहीं करते। हे जगदीश्वर! हम तो यहां तुझ से केवल यही विनय करते हैं कि (वयं पथः मा प्रगाम) हम पथ से-सुपथ से कभी विचलित न हों, हम सत्मार्ग से—राहे रास्त से कभी भटक न जायें।

हे इन्द्र! हे जगदीश! तेरी पावन छत्र-छाया में वर्तमान रहते हुए नित्य प्रति सप्पथ-सन्मार्ग पर चलते हुए जो भी हमें धन वैभव, सुख सौभाग्य प्राप्त होगा वही हमारे लिए वास्तविक ऐश्वर्य होगा, वही वास्तव में हमारे लिए सच्चा धन वैभव होगा।

सत्पथ से उपलब्ध हुए उस ऐश्वर्य से (सोमिनः) ऐश्वर्यशाली बने हुए हम (यज्ञात् मा प्रगाम) यज्ञ मार्ग से विचलित न होवें। अर्थात् हम तेरी पावन छत्र-छाया में जहां सत्पथ पर चलते हुए ऐश्वर्य प्राप्त करें वहां उस ऐश्वर्य को पाकर सत्पथ पर चलते हुए ही, अर्थात् यज्ञ आदि शुभ कर्मों को करते हुए ही उसका व्यय करें।

हम सत्पथ से उपलब्ध उस धन वैभव का ऐसे ढंग से उपयोग करें कि जिस से हमारा 'ब्रह्म यज्ञ' सम्पन्न होता रहे अर्थात् हमारी वेदादि सत्य शास्त्रों के स्वाध्याय में तथा तुझ ब्रह्म में निरन्तर श्रद्धा बढ़ती रहे, विश्वास बढ़ता रहे। उस धन का हम 'देव यज्ञ' में ऐसे ढंग से

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय करें कि जिस से जहां वायुमण्डल की शुद्धि होती रहे वहां यज्ञ में वेद मन्त्रों के उच्चारण और मनन चिन्तन तथा निदिध्यासन आदि से वातावरण की पवित्रता के साथ-साथ हमारे आहार, व्यहार और आचारों में भी दिव्यता आती रहे। 'वलिवैश्वदेव यज्ञ' में अर्थ का ऐसा उपयोग करते रहें कि जिससे गौ, कुक्कुर, काक आदि भी भूख प्यास से विह्वल होकर यमराज के अतिथि न वन जायें। ऐसी विधि से 'पितृयज्ञ' में धन को खर्च करते रहें कि हमारे माता पिता, दादा दादी आदि पितृजन सदा अन्न-पान, वस्त्र, सेवा-शुश्रूषा आदि से तृप्त होते रहें। ऐसे ढंग से 'अतिथ यज्ञ' में धन का उपयोग करें कि ब्रह्मचारी, विद्वान् ज्ञानी, तपस्वी ,साधु, संन्यासी आदि कभी भोजन आच्छादन आदि के अभाव में प्रचार एवं परोपकार आदि कर्मों से उपरत न हो जायें।

हे इन्द्र ! इस प्रकार जहां तेरी कृपा से सत्पथ पर चलते हुए जिस धन वैभव से हम धनी मानी वनें वहां उस को सत्पथ पर-ऋत पथ पर यज्ञमय पथ पर उदार भाव से व्यय करके भी हम यशस्वी वनें।

प्रभुवर ! हमारा सत्पथ से पुरुषार्थ पूर्वक उपलब्ध हुआ धन-वैभव सदा देवों की पूजा में—सेवा शुश्रूषा में लगे। अपने समान स्थिति वालों पर भी कभी कष्ट-आपत्ति आ जाए तो उनकी सहायता सहयोग में भी लगे।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम से जो निम्न स्थिति वाले दीन हीन जन हों, उनकी सुख सुविधा में लगें।

हे परमेश्वर! ऐसे यज्ञ मय प्रसंगों में, परोपकारमय कर्मों में, कल्याणमय शुभ कृत्यों में, दीन हीनों की सेवा सहायता रूप कार्यों में (अरातयः नः अन्तः मा स्थुः) वाधा डालने वाले अराति-भाव-अदान भाव-स्वार्थ-भाव हमारे भीतर कभी न रहें। क्योंकि ये अराति भाव-ये अदान भाव-ये स्वार्थ-भाव अपने तन मन धन रूप ऐश्वर्य के सदुपयोग के सौभाग्यमय अवसरों से वञ्चित कर देंगे, आयु, अनुभव तथा ज्ञान वृद्ध दिव्य महापुरुषों के मान-सम्मान और सेवा-शुश्रूषा से हमें वञ्चित कर देंगे, समय आने पर बन्धु-बान्धव एवं सखाओं की सहायता सहयोग रूप सुकर्मों से हमें वन्चित कर देंगे, दीन-दुखियों, पीडितों, असहायों और अनाथों के पेट की आग बुझाने से, उनकी नग्न देहों को ढक कर उनकी लाज बचाने से, उनकी औषधोपचार द्वारा नीरोग करने से हमें वञ्चित कर देंगे, उन को धैर्य और सान्त्वना देकर उनके आंसू पोंछने और उनके भीतर के घावों पर मर्हम लगाने रूप सुकर्मों से हमें वञ्चित कर देंगे। इतना ही नहीं इस के परिणाम स्वरूप हमारे ये अपने ही अराति भाव-अदानभाव-स्वार्थभाव हमें उन आयु, अनुभव एवं ज्ञानवृद्ध ज्ञानी तपस्वी संन्यासी योगी महानुभावों के

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पावन स्नेह एवं आशीर्वाद से वंचित कर देगें, प्रिय मित्रों के निश्छल स्नेह और सहयोग एवं शुभ कामनाओं से हमें वञ्चित कर देंगे, तथा दीन हीन अनाथ एवं पीड़ित मानवों के स्नेह, सम्मान, श्रद्धा और शुभकामनाओं, धन्यवादों तथा साधुवादों से हमें वञ्चित कर देंगे। अतः—

हे इन्द्र ! हे जगदीश ! हे हृदय सम्राट् प्रभुदेव ! हमें सत्पथ पर चलाना और सत्पथ पर चलाकर हमें ऐसा पावन ऐश्वर्य प्राप्त कराना जिस से हम ऐश्वर्यशाली बन कर कभी स्वार्थी न बन जायें, स्वार्थी बन कर कहीं स्वयं ही खाने-पीने और मौज उड़ाने में ही न लग जायें, भोगविलासों में ही न पड़ जायें, वरन् तेरी कृपा से तेरे उस ऐश्वर्य को प्राप्त कर हम यज्ञ आदि शुभ कर्मों का आचरण करें। यज्ञादि परोपकारमय शुभ कर्मों को सम्पन्न करने पर जो 'यज्ञ शेष' रह जाय उस 'यज्ञ शेष' का ही हम तेरा धन्यवाद करते हुए उपभोग करें—तेरे प्रति कृतज्ञतावश झूम झूम कर सेवन करें। यही है अभ्यर्थना, यही है प्रार्थना, यही है याचना, स्वीकार करो और हमारा सर्वविध कल्याण करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ५

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युराचके ॥ यजु० २०-१ ॥

अन्वयः—वरुण ! मे इमं हवं श्रुधि अद्य च मृडय । अवस्युः त्वाम् आचके ।

अन्वयार्थः—(वरुण !) हे वरुण ! हे वरणीय परमेश्वर ! (मे इमं हवं श्रुधि) तू मेरी इस पुकार को सुन, (अद्य च मृडय) और मेरी इस पुकार को सुन कर तू आज ही मुझे सुखी कर (अवस्युः त्वाम् आचके) हृदय से तुम्हारी रक्षा का इच्छुक मैं तुम्हें पुकारता हूँ ।

(वरुण[2] !) हे पापों से पृथक् करने वाले, निष्पाप बन जाने पर आशीर्वाद देने वाले तथा समर्पित होकर उपासना करने वाले सच्चे साधक को तृप्त करने वाले वरणीय वरुणदेव ! (मे इमं हवं श्रुधि) तू मेरी इस पुकार को सुन, मेरी इस प्रार्थना को सुन, मेरी इस याचना को सुन, (च अद्य मृडय) और मुझे आज ही सुखी कर, मुझे आज ही दुःखों से दूर कर के हर्षित कर-प्रसन्न कर । मैं तुझ वरणीय वरुणदेव की शरण में आकर (अवस्युः

१—'आचके'–आचक इति कान्तिकर्मा ॥
निघं० २-६ ॥ कामये

२—वरुणः–वारयति दोषादिति वरुणः । वृणोति–आच्छादयतीति वरुणः । व्रियते इति वरुणः ।

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्राम् आचके) हृदय से तेरा संरक्षण चाहता हुआ यह कामना कर रहा हूँ, यह प्रार्थना कर रहा हूं।

हे वरुण ! हे वरणीय परमेश्वर ! मैं तुझ से अभ्यर्थना कर रहा हूँ, मैं तुझसे विनय कर रहा हूँ। हे प्रभुवर मैं आज से ही नहीं, सुदीर्घ काल से तुझे पुकार रहा हूँ, चिरकाल से तुझ से याचना कर रहा हूं। हे दयानिधे ! पुकारते-पुकारते, प्रार्थना करते-करते, याचना करते-करते मैं थक गया-हार गया, तेरी राह तकते-तकते, तेरी राह देखते-देखते अब तो यह शरीर भी लड़खड़ा गया, मन भी डगमगा गया। इस प्रकार सब तरह से मैं थक गया, हार गया, अधीर हो गया, परन्तु फिर भी हे नाथ ! न जाने कैसे यह चाह बनी हुई है, यह भीतर की टीस बनी हुई है कि तू प्रियतम प्रभु किसी प्रकार से मेरी इस पुकार को सुन ले, किसी प्रकार से मेरी प्रार्थना को सुन ले, किसी प्रकार से मेरी विनति को सुन ले, किसी प्रकार से मेरी मांग को मान ले और मुझ दुःखी को सुखी कर दे, मुझ अशान्त को शांत कर दे, मुझ अतृप्त को तृप्त कर दे।

हे वरुण ! अब मेरे भीतर से आवाज आई और मैं उस से भांप गया, कि तू क्यों मेरी टेर सुनता नहीं, तू क्यों कृपालु होकर मुझे निहारता नहीं, तू क्यों मेरी ओर से उपेक्षित है, इसलिये ही तो न, कि मैंने तुझ वरुण देव की प्रेरणाओं के अनुसार एवं तुझ वरणीय प्रभुवर की

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदाज्ञाओं के अनुरूप अपने को धोया नहीं, अपने भीतर-बाहर के मलों को अपने से पृथक् कर अपने को साफ़-सुथरा, शुद्ध-पवित्र बनाया नहीं, अपने को दुर्गुण-दुर्व्यसनों से हटाया नहीं, अपने को तप की भट्टी में झोंक कर खरा सोना वा कुन्दन बनाया नहीं, अर्थात् अपने को निखारा नहीं। अब जब मैंने ऐसा किया ही नहीं तो भला तू भी मेरी पुकार कैसे सुने, मेरी प्रार्थना कैसे सुने, मेरी ओर स्नेह एवं कृपा से कैसे निहारे और किस विध मुझ दुःखी को सुखी करे, किस प्रकार मुझ अशान्त को शान्त करे, किस तरह मुझ अतृप्त को तृप्त करे ?

हे वरण करने के योग्य पावन परमेश्वर ! अब मैंने तेरी प्रेरणानुसार अपने को धोना आरम्भ कर दिया है, अपने को बाहर-भीतर से साफ़-सुथरा, शुद्ध-पवित्र बनाने का हार्दिक प्रयास प्रारम्भ कर दिया है। अब मैंने तप की भट्टी में अपने को झोंक कर कुन्दन बनाना आरम्भ कर दिया है। अब मुझे यह भी अनुभव हो रहा है कि सच कहा था ऋषिवर दयानन्द ने कि—'प्रार्थना उस की सुनी जाती है, पुकार उस की सुनी जाती है, टेर उसकी सुनी जाती है, जो प्रार्थना वा पुकार से पूर्व उस सम्बन्ध में पूर्ण पुरुषार्थ कर के पसीना बहा लेता है।' सो उस ऋषिवर के अनुभव के आधार पर और तेरी दिव्य प्रेरणा एवं वेदाज्ञा के आधार पर जब मैंने कुछ करना आरम्भ कर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया तो अब मुझे वास्तव में कुछ सुख भी मिलने लगा है, कुछ शान्ति भी मिलने लगी है। नाथ ! अब तो मुझ में तेरे प्रति कुछ ऐसा आकर्षण सा होने लगा है कि जी करता है, सर्वतोभावेन तेरा वरण कर लूँ, सब ओर से तुझ को अपना ही लूं, सब प्रकार से तुझ में खो ही जाऊं। इसीलिये मैं हृदय से तेरा वरण कर (त्वां अवस्युः आचके) तेरी शरण में आकर तेरे पूर्ण संरक्षण की कामनाओं से ओतप्रोत हुआ-हुआ तुझसे प्रार्थना कर रहा हूं, तुझ को पुकार रहा हूं। न जाने इस से पूर्व भी मैंने अपने को सुखी, शान्त एवं तृप्त करने के लिये किस-किस से प्रार्थना की, पुकार की, किस-किस के द्वार पर अलख जगाई, पर मैं तब भी सुखी न हुआ, शान्त न हुआ, तृप्त न हुआ। मैंने अपने पूर्ण संरक्षण के लिये न जाने किस-किस का वरण किया, न जाने किस-किस को स्वामी बनाया, न जाने किस-किस के प्रति आत्म समर्पण किया, पर नाथ ! फिर भी मेरा पूर्ण रूप से संरक्षण हुआ नहीं, मैं पूर्ण रूप से तृप्त हुआ नहीं, मैं पूर्ण रूप से निहाल हुआ नहीं। पर हे नाथों के नाथ ! अब मुझे विश्वास है कि जिस वरणीय प्रभु का मैंने वरण किया है, और वरण कर जिस दिव्य द्वार पर मैंने अलख जगाई है, वह मुझे सब प्रकार से तृप्त कर देगा, निहाल कर देगा। इस द्वार पर आकर अब मुझे बिल्कुल भी निराश नहीं

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना पड़ेगा, इस आशा पर मैंने यहां अलख जगाई है। अतः प्रभुवर! कृपा करो, अनुकम्पा करो और इस शरणागत को सब प्रकार से निहाल करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ६

ओ३म् यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यमङ्गिर ॥ऋ० १.१.६ ॥

अन्वयः—अङ्ग अग्ने ! त्वं दाशुषे यत् भद्रं करिष्यसि, अङ्गिरः! तत् तव सत्यम् इत् ।

अन्वयार्थः—(अङ्ग अग्ने !) हे प्रिय प्रकाश स्वरूप परमेश्व ! (त्वं दाशुषे यत् [2]भद्रं [3]करिष्यसि) तुम दानशील आत्मसमर्पण करने वाले—उपासक के लिए जो भद्र करते हो, कल्याण करते हो (अङ्गिरः !) हे ब्रह्माण्ड के प्राण स्वरूप यद्वा शरीर स्थिति के हेतु जीवन सार प्रभो ! (तत् तव सत्यम् इत्) वह तुम्हारा नियम सत्य ही है। वह तुम्हारा विधान अटल ही है।

(अङ्ग अग्ने !) हे प्यारे और सब जग से न्यारे ज्ञान के अनुपम स्रोत विभो ! तू अंग है, अंग के तुल्य प्रिय है। यह हम पढ़ते हैं, यह हम सुनते हैं, परन्तु इसकी हमें सजग अनुभूति नहीं है। क्योंकि जैसे हमारे शरीर का कोइ अंग हमसे पृथक् किया जाता है तो हम

१—दाशुषे—'दाश्रृदाने+क्वसु-दाश्वान्,दाशुषे-चतुर्थी एक वचन।
२—भद्रम्—'भदि कल्याणे सुखे च'+रक्-भद्रम्।
३—करिष्यसि—करोषि (लट् के अर्थ में लृट् लकार हुआ)।
४—अङ्गिरः! ब्रह्माण्डस्य अङ्गानां रसोऽङ्गिराः तत्सम्बुद्धौ अंगानि शरीरम् तस्यस्थिति हेतो रसस्यकर्त्ता अंगिराः तत्सम्बुद्धौ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तड़फड़ाते हैं, अर्थात् महत् कष्ट का अनुभव करते हैं, परन्तु ऐसी स्थिति का अनुभव हमें आज आप के वियोग में नहीं होता। प्रभुवर ! जैसे शरीर का कोई भाग मारा जाता है, उसके प्रति रक्त सञ्चार आदि का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है तो तब उसके पार्थक्य पर भी हमें कष्ट की अनुभूति नहीं होती, कष्ट की संवेदना नहीं होती। ठीक वैसे ही हमारी शक्तियों का प्रवाह तुम्हारी ओर बन्द हो जाने से हमें तुझ परम अंगरूप प्यारे प्रभु के वियोग की-पार्थक्य की प्रतीति नहीं होती।

हे प्यारे प्रभो ! हमें ऐसी सद्बुद्धि दो, ऐसी सत्प्रेरणा दो, ऐसी रुचि दो कि पुनः हमारे 'शरीर के उस मृत भाग में रक्त संचार के समान' श्रद्धा भक्ति पूर्वक वृत्ति-प्रवाह तुझ परम अंग रूप प्रभु की ओर सहज स्वभाव से हो ताकि हम 'पक्षाघात' के रोग से मुक्त होकर तुझ परमप्रिय अंगरूप प्रभु को हर दिन, हर दिन में भी हर प्रातः और हर सायं, फिर हर दिन प्रातः सायं ही क्या, हर दिन में भी हर पल, हर घड़ी अपने अबाध वृत्ति प्रवाह से इतना अपना अभिन्न अंग बना लें, इतना अपना अभिन्न अंग अनुभव करने लगें कि फिर एक क्षण के लिए भी हमें तुम्हारा वियोग खटकने लगे, कष्टकर प्रतीत होने लगे। प्यारे प्रभुवर ! जीवन की कितनी अनुपम वे घड़ियां होंगी, कितनी सुखकर वे घड़ियां होंगी, कितनी तृप्तिकर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे घड़ियां होंगी तब जब कि ऐसा होगा। वास्तव में जब ऐसा होगा हमें प्रतिपल सर्वत्र तू ही तू भासने लगेगा, कण-कण के झरोखे में से तू झांकता हुआ दिखाई देगा, सचमुच बड़ा ही आनन्दप्रद वह समय होगा जब तू हमारे सामने होगा और हम तुम्हारे सामने होंगे।

हे ऐसे प्यारे प्रकाश के पुञ्ज परमेश्वर! (त्वं दाशुषे यत भद्रं करिष्य) जो इस जगत में दाश्वान् है, दानशील है, अपना तन, मन और धन परोपकार में लगाता रहता है, तू उसका सब प्रकार से कल्याण करता है। इस से ज्ञात होता है कि जो इस जगत् में दाश्वान् है, अपने से आयु, अनुभव एवं ज्ञान आदि की दृष्टि से जो बड़े हैं उनकी वह सेवा करता है, शुश्रूषा करता है उनका वह मान करता है, सम्मान करता है। और जो समान हैं, मित्र हैं, सखा हैं उनको भी वह समय पड़ने पर स्नेह देता है सहयोग देता है, सहानुभूति देता है। तथा जो आयु, अनुभव एवं ज्ञान से छोटे हैं, अन्न धन वस्त्र आदि के अभाव से जो पीड़ित हैं, रोगी होकर औषधि और सान्त्वना के लिए जो सदा हाथ पसारे रहते हैं, स्नेह और सहानुभूति के लिए जो तरस जाते हैं, उन्हें जो सान्त्वना देता है, धन देता है, अन्न देता है, वस्त्र देता है, उनके आंसु पोंछता है, उन के दुःख दर्द और पीड़ा को जो देखता, सुनता है और तदनुरूप दौड़धूप कर उन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए दवा का प्रबन्ध आदि करता है। यहां तक कि अपने तन, मन और धन आदि से सब प्रकार से उन्हें सुख देता है। फिर जो यह सब कुछ करते हुए भी इस सब का श्रेय तुझ पावन परमेश्वर को देता है अर्थात् अपना तन, मन और धन तेरी आज्ञाओं पर तेरी प्रेरणाओं पर न्योच्छावर करता है और फिर भी यह विभोर होकर गाता है—

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर॥

नाथ! ऐसे दाश्वान् का, ऐसे आत्मसमर्पण करने वाले का तू भद्र करता है; सर्वविध कल्याण करता है। क्योंकि (तत् तव सत्यम् इत्) उसका वह भद्र करना-कल्याण करना तेरा सत्य नियम है, अटल नियम है, निश्चल नियम है। योगीराज श्री कृष्ण जी ने भी तभी तो गीता में हमें सान्त्वना देते हुए कहा है कि—"न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति" अर्थात् 'कोई भी व्यक्ति जो कल्याण का कार्य करता है वह कभी दुर्गति को-दुर्दशा को नहीं प्राप्त होता'। हे सत्य नियमों के विधाता परमपिता परमात्मन्! तेरे इस निश्चल विधान पर पूर्ण विश्वास करके ही तो सभी महापुरुष, सभी ज्ञानी, तपस्वी, ऋषि मुनि सर्वत्र शुभ ही शुभ करते रहते हैं, सर्वत्र सबका भला ही भला करते रहते हैं, भले ही ऐसा करने में उन्हें

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना भी दारुण दुःख क्यों न सहन करना पड़े। हे दिव्य देव ! उन्हीं ऋषि-महर्षियों की, मुनी-मनीश्वरों की ज्ञानी-प्रज्ञानियों, पुरुष-महापुरुषों की ऐसी जीवन लीलाओं को देख-देखकर और तेरे वेदगत पावन दिव्य अटल विधि-विधानों को देख देख कर हमें भी पूर्ण विश्वास होता है कि जो दानशील होगा, जो सब का निरन्तर भला ही करता रहेगा उसका भी निश्चित् रूप से भला ही होगा-कल्याण ही होगा। ऐसे हे प्रभुवर ! दानशील परोपकार परायण मनुष्य को जहां तू इस लोक में सुख-सौभाग्य से सम्पन्न करता है वहां उसका परलोक में भी सर्वविधि कल्याण करता है। इस प्रकार वह जहां अभ्युदय का दिव्य भाजन बनता है वहां निश्रेयस से भी वह वञ्चित नहीं रहता, वह जहां सांसारिक सुख-सौभाग्यों का उपयोग करता है वहां उस परम पिता परमात्मा में ध्यानावस्थित होकर भीतर ही भीतर विभोर करने वाले आनन्द सरोवर में डुबकी मार - मार कर अपनी सब प्रकार की तपश मिटाकर सब प्रकार से शान्त और तृप्त हो जाता है।

हे अंगिरः ! हे अंग अंग में रमने वाले प्रभुदेव ! हमें भी वह बुद्धि दो कि तेरे इस दिव्य नियम में ढलकर अर्थात् अपना तन, मन, धन आदि सब तेरे प्रति समर्पित कर उस भद्र को पा जायें, उस कल्याण को पा जायें, उस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख सौभाग्य को पा जायें, उस तृप्ति और आनन्द को पा जायें, कि जिस के पाने के उपरान्त कुछ पाने को फिर शेष न रह जाये। नाथ ! कब वे सौभाग्यशाली क्षण आयेंगे जबकि हम तेरे प्यार और आशीर्वाद के भाजन बनेंगे? वेद से और भीतर से यही प्रत्युत्तर ध्वनित होता है कि जब हम दाश्वान् बनेंगे। सो प्रभु जी ! ऐसी कृपा करो कि हम शीघ्र सच्चे दाश्वान्-सच्चे दानी बनकर तेरे अनुग्रह के पात्र बन सकें।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ७

ओ३म् तेजोऽसि तेजोमयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि
बलमसि बलं मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥
यजु० १६. ६ ॥

अन्वयः—(सोम !) तेजः असि, तेजः मयि धेहि। वीर्यम् असि, वीर्यम् मयि धेहि। बलम् असि, बलं मयि धेहि। ओजः असि, ओजः मयि धेहि। मन्युः असि, मन्युं मयि धेहि। सहः असि, सहः मयि धेहि।

अन्वयार्थः—हे सोम ! हे सर्व शुभगुण सम्पन्न परमेश्वर ! (तेजः असि तेज मयि धेहि) जो तुझ में तेज है वह तेज मुझ में भी धारण कर (वीर्यम् असि वीर्यम् मयि धेहि) जो तुझ में पराक्रम है वह पराक्रम मुझ में भी भर (बलम् असि बलम् मयि धेहि) जो तुझ में बल है वह बल मुझ में भी धर (ओजः असि ओजः मयि धेहि) जो तुझ में ओज है वह ओज मुझ में भी धारण कर (मन्युः असि मन्यु मयि धेहि) जो तुझ में मन्यु है वह मन्यु मुझ में भी भर (सहः असि सहः मयि धेहि) जो तुझ में सहनशीलता है वह सहनशीलता मुझ में भी धर।

हे सर्व सद्गुणनिधान प्रभो ! तू तेजः स्वरूप है, तू तेजस्वी है, तुझ में तेज है। हे परमेश्वर ! जैसे अग्नि में तेज है वैसे तुझ में तेज है, जैसे विद्युत में तेज है वैसे

CC-0 In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझ में तेज है, जैसे सूर्य में तेज है वैसे तुझ में तेज है, जैसे अस्त्र-शस्त्र की धार में तेज है वैसे तुझ में तेज है। प्रभुवर ! जैसे अग्नि, विद्युत् और सूर्य आदि में दीप्ति है वैसे तुझ में भी दीप्ति है, जैसे इन में कान्ति है वैसे तुझ में भी कान्ति है।

हे दिव्य देव ! जो तेरी शरण में आ जाता है, जो तेरी राह पर चल पड़ता है उसे भी तू तेजस्वी बना देता है, उसमें भी तू तेज भर देता है, उसमें भी तू द्युति धर देता है, उसे भी तू चमका देता है। प्रभु देव ! इसी आशा और विश्वास पर ही तो मैं तेरी शरण में आया हूं, अतः तू मुझ में तेज धर और मुझे तेजस्वी बना, तू मुझ में द्युति धर और मुझे द्युतिमान् बना, तू मुझ में दीप्ति धर और मुझे दीप्तिवान् बना।

हे सर्वैश्वर्य-सम्पन्न प्रभो ! तू वीर्यवान् है, तुझ में वीरता है, तुझ में पराक्रम है, तुझ में विक्रम है, तुझ में शक्ति है, तुझ में दृढ़ता है, इसलिए जो तेरी शरण में आ जाता है तू उसे भी वीर्य से सम्पन्न कर देता है, वीरता से भर देता है, अर्थात् उसे वीर बना देता है, पराक्रमशाली बना देता है, विक्रमशाली बना देता है, शक्तिशाली बना देता है, सुदृढ़ बना देता है। प्रभु देव ! इसी आशा और विश्वास से मैं भी तेरी शरण में आया हूं। अतः तू मुझे भी वीर्यवान् बना, मुझ में भी वीरता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर, मुझ में भी विक्रम और पराक्रम भर और मुझ अशक्त को भी सशक्त बना, मुझ अदृढ़ को भी दृढ़ और सुदृढ़ बना।

हे सोम ! सर्वबल-सम्पन्न देव ! तू बलवान् है, तुझ में बल है, तुझ में ताकत है, तुझ में शक्ति है, तुझ में प्रचण्डता है। इसलिए जो तेरे समीप आता है उसे भी तू बलवान् बना देता है, सबल बना देता है, ताकतवर बना देता हैं, शक्तिशाली बना देता हैं, सशक्त बना देता है, उग्र और प्रचण्ड बना देता है। प्रभुवर ! इसी आशा एवं विश्वास को लेकर मैं तेरी शरण में उपस्थित हुआ हूं। अतः तू मुझ में बल भर और मुझे बलवान् बना, मुझ में शक्ति भर और मुझे शक्तिमान् बना, मुझ में ताकत भर और मुझे ताकतवर बना, मुझे उग्र बना, मुझे प्रचण्ड बना।

हे सोम प्रभो ! तू ओजस्वी है, तुझ में ओज है, तुझ में महान् प्राण बल है, तुझ में दिव्य सामर्थ्य है, तुझ में दिव्य कान्ति है, तुझ में अनुपम सौन्दर्य है, तुझ में अद्वितीय पवित्रता है। इसलिए तुझ से प्रभावित हुआ-हुआ जो उपासक तेरे समीप आ जाता हैं उसे भी तू ओजस्वी बना देता हैं, प्राणबल से सम्पन्न बना देता है, दिव्य सामर्थ्य से समर्थ बना देता हैं, अपनी कान्ति से कान्तिमान् कर देता हैं, सौन्दर्य से सम्पन्न कर देता है,

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने जैसा पवित्र बना देता है, दर्शनीय बना देता है, आदरणीय बना देता है। प्रभुवर ! इस कारण से मैं भी तेरे दर पर आया हूँ। अतः तू मुझ में भी ओज भर और मुझे ओजस्वी बना, प्राण, बल से मुझे सम्पन्न बना मुझे दिव्य सामर्थ्य से समर्थ बना, मुझे कान्ति से कान्तिमान् बना, मुझ में पवित्रता भर कर मुझे दर्शनीय बना, सब प्रकार से सुन्दर बना, आदरणीय बना।

हे सब सद्गुणों के स्रोत जगदीश ! तू 'मन्यु स्वरूप है, रुद्र स्वरूप है, अतः दुष्टों पर सदा तेरा रोष बना रहता है - क्रोध बना रहता है और उनका सदा तू वध करता रहता है-संहार करता रहता है। इस प्रकार उन पर विजयी होकर तू सदा कान्तिमान् बना रहता है।

प्रभुवर ! जो तेरे समीप श्रद्धा से आता है उनमें भी तू मन्यु भर देता है, दुष्टों के प्रति सदा रोष भर देता है, क्रोध भर देता है, उनका वध करने की शक्ति भर देता है, उनका संहार करने की सामर्थ्य भर देता है, उन पर विजय पाकर सोत्साह अपनी विजय पताका लहराने का उत्साह भर देता है। प्रभुदेव ! यही भावना लेकर मैं तेरी शरण में उपस्थित हुआ हूँ अतः तू मुझ में भी वह अनुपम मन्यु भर, वह रुद्र रूप भर, वह दुष्टों को

१-मन्युर्मन्यते दीप्ति कर्मण: क्रोधकर्मणो वा ॥निरु० १०.३.२९॥
मन्यते कान्तिकर्मा। निघं० २.६ ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुलाने और मार भगाने वाला क्रोध भर, उत्साह भर, जिससे कि मैं भी निरन्तर अपने भीतर विप्लव मचाने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार, ईर्ष्या, द्वेष आदि अपने भीतरी दोषों पर तथा अपने बाह्य शत्रुओं पर रोष प्रकट कर सकूं, क्रोध प्रकट सकूं और उनका वध कर सकूं वा उनको मार सकूं ताकि ये दोष वा शत्रु मेरी सरलता का अनुचित लाभ उठाकर मुझे अपना ठिकाना न बनालें, मुझे अपना अड्डा न बना लें। प्रभु-देव ! सदा तेरी कृपा से मुझ में वह तेज बना रहे, वह सशक्त प्राण बना रहे, बल बना रहे और ओज बना रहे तथा मन्यु बना रहे एवं ऐसी क्रान्ति बनी रहे कि प्रथम तो ये दोष, दुर्गुण वा दुष्ट घुसने ही न पावें, और यदि किसी प्रकार जग घुस भी जावें तो घुसते ही तुरन्त निगृ-हित करके समाप्त कर दिये जायें-मृत प्रायः कर दिये जायें। प्रभुदेव ! ऐसा अनुपम मन्यु मुझ में भर, ऐसा अद्भुत उत्सास मुझ में भर कि मैं किसी प्रकार भी इन से हार न मानूं।

हे सोम ! हे शक्तियों के भण्डार परमेश्वर ! तू [1]सहः स्वरूप है, तू सहस्वान् है, तू बलवान् है, तू सहन-शील है। तुझ में सहनशीलता कूट-कूट कर भरी हुई

---

[1] सहो बलम । सहः इति बलनाम (निघं० २.९) सह सहनम् (दयानन्द) सहनशीलता।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है इसलिए तू कठिनाईयों को सहन करने वाला है, उनका डटकर-जमकर प्रतिरोध करने वाला है, उनका साहस पूर्वक मुकाबला करने वाला है। यदि ऐसा न होता तो तू इस विशाल ब्रह्माण्ड को कैसे धारण कर सकता और कैसे इस महान् कार्य में सफल हो पाता।

प्रभुवर ! जो तेरे चरणों में आ जाता है उसमें भी तू सहः बल (सह इति बल नाम-निघं० २.६) भर देता है, उस में भी तू सहनशीलता भर देता है, साहस भर देता है ताकि वह जीवन में बड़ी से बड़ी कठिनाई का भी सहज स्वभाव से सामना कर सके, बड़ी से बड़ी आपत्ति और विपत्ति का मुकाबला कर सके।

हे प्रभु देव ! इसी आशा और विश्वास पर ही तो मैंने आप की ओर पग बढ़ाया है और आपका आश्रय लिया है। अतः तू ही मुझ में सहः अर्थात् बल भर, सहनशीलता भर, साहस भर, ताकि मैं बड़ी दृढ़ता से जीवन में आई हुई हर कठिनाई का हंसते-हंसते सामना कर सकूं, हर विपत्ति का डट कर प्रतिरोध कर सकूं, अपने हर शत्रु को 'चाहे वह आन्तरिक हो वा बाह्य' मसल कर अपनी विजय का डंका बजा सकूं तथा अपनी विजय की पताका लहरा सकूं।

हे प्रभो ! तू ऐसी कृपा कर कि मैं तेरी अनुपम छत्र-छाया में तेजस्वी होकर, वीर्यवान होकर, बलवान्

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर, ओजस्वी होकर, मन्युमान् होकर और अद्वितीय साहसी होकर जगत् में जीता हुआ हर बुराई, हर आपत्ति, हर विपत्ति का डट कर सामना कर सकूं, डटकर प्रतिरोध कर सकूं और अन्त में तेरा नाम लेता-लेता, तेरा गुणगान गाता-गाता, तेरा धन्यवाद करता-करता विजय का डङ्का बजा सकूं तथा विजय पताका लहरा सकूं एवं उसके नीचे इस महान् क्रान्ति के बाद ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः का पाठ कर सकूं ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ८

ओ३म् दृते दृँह मा । ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ॥यजु० ३६-१६॥

अन्वयः—दृते ! मा दृँह । ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्, ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम् ।

अन्वार्थः—(दृते !) हे अपने नियम में दृढ़तम परमेश्वर ! (मा दृँह) मुझे दृढ़ बना, सुदृढ़ बना, जिससे कि मैं (ते संदृशि) तेरे संदर्शन में, तेरी सम्यक् दृष्टि में (ज्योक् जीव्यासम्) निरन्तर जीता रहूं (ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्) तेरी देख-रेख में सतत् जीता रहूँ ।

दृते—हे परम सुदृढ़ भगवन् ! हे चट्टान के समान सुदृढ़ रहने वाले परमेश्वर ! हे बाधाओं को विदीर्ण करने वाले जगदीश्वर ! (मा दृँह) तू मुझे भी दृढ़ बना; मुझे भी सुदृढ़ बना । हे प्रभो ! (ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्) मैं चाहता हूं कि मैं जीता रहूं, मैं निरन्तर जीता रहूँ, मैं सतत् जीता रहूँ, परन्तु अब मैं तेरे संरक्षण में जीना चाहता हूं, तेरे संदर्शन में जीना चाहता हूँ, तेरी देख-रेख में जीना चाहता हूं, तेरी अध्यक्षता में जीना चाहता हूँ, तेरे नेतृत्व में जीना जाहता हूं, अर्थात् मैं चाहता हूं कि मुझे सदा यह अनुभव होता रहे कि तू मुझे देख रहा है । हे जगदीश्वर ! मेरी एक-एक चेष्टा, मेरा एक-एक क्रिया-कलाप, मेरी एक-एक वृत्ति, प्रवृत्ति, मेरा एक-एक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनन-चिन्तन यह सोच कर होता रहे, यह विचार कर होता रहे कि तू मुझे देख रहा है, भली भान्ति देख रहा है, भीतर-बाहर से देख रहा है। इस का यह परिणाम होगा कि मैं समझ सकूंगा कि मेरी कोई भी ऐसी वृत्ति-प्रवृत्ति नहीं हो सकती जो कि मैं तुझ से छुपा सकूं, कोई ऐसा क्रिया-कलाप नहीं हो सकता जो कि मैं तुझ से ओझल होकर कर सकूं। प्रभुदेव! वास्तव में मेरे भीतर बाहर जो कुछ भी मेरे द्वारा हो रहा है तू उस सबको हस्तामलकवत् सदा देख रहा है। तेरा यह देखना सब प्रकार से मेरे हित में है, कल्याण में है।

हे सर्व शक्तिमान् परमेश्वर! तेरे सन्दर्शन में ही मैं निरन्तर जीता रहूँ अर्थात् मुझे यह भली भान्ति विदित होता रहे, कि तू सम्यक् प्रकार से मुझे देख रहा है, तू पैनी दृष्टि से मुझे निहार रहा है।

प्रभुवर! तेरे सन्दर्शन के कारण, तेरे साक्षी होने के कारण मुझे यह भी भीतर से सदा बोध होता रहे कि तू इसलिये मेरी प्रत्येक चेष्टा को पैनी दृष्टि से देख रहा है कि तू जगत् का सम्राट है, न्यायाधीश है और तुझ को सब के कर्मफल की व्यवस्था करनी होती है, सबके प्रति न्याय व्यवस्था करनी होती है।

इस प्रकार तेरी कृपा से जब मुझे तेरी न्याय-व्यवस्था का बोध हो जायेगा अर्थात् मैं भली भान्ति समझ जाऊँगा

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि 'जैसा मैं कर्म करूंगा वैसा ही फल पाऊंगा' तो फिर मैं तेरे वेदादेश के अनुसार तथा भीतर से तेरी प्रेरणा के अनुकूल कार्य करता हुआ सतत् सुख पूर्वक जी सकूंगा।

हे भगवन् ! मुझे सदा तू देखने वाला है, मुझे सदा तू भीतर-बाहर से जानने वाला है, यह सत्य-यह तथ्य क्षण भर के लिये, पल भर के लिये भी जब मेरी दृष्टि से ओझल हो जाता है तो तब मेरी सूझ-बूझ खो जाती है और फिर मेरे द्वारा वह सब कुछ होता है जो नहीं होना चाहिये, वह सब कुछ सोचा जाता है जो नहीं सोचा जाना चाहिये, वह सब देखा जाता है जो नहीं देखा जाना चाहिये, उस दृष्टि से देखा जाता है जिस दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिये, वह सब कुछ सुना जाता है जो नहीं सुना जाना चाहिये, वह सब कुछ बोला जाता है जो नहीं बोला जाना चाहिये, वह सब कुछ खाया-पीया जाता है जो खाया-पीया नहीं जाना चाहिये, उस पथ की ओर चला जाता है जिस पथ की ओर नहीं जाना चाहिये। तात्पर्य यह है कि मेरे द्वारा तब वह सब कुछ किया जाता है जो नहीं किया जाना चाहिये। इस लिये तो हे दृढ़तम जगदीश्वर ! मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ, अभ्यर्थना करता हूँ, विनय करता हूँ कि तू मुझे दृढ़ बना, सुदृढ़ बना ऐसा कि फिर मैं निश्चल होकर तेरे

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्शन में, तेरी साक्षी में, तेरी देख-रेख में, तेरे नेतृत्व में सुदीर्घ काल तक जी सकूं, चिरकाल तक जी सकूं। अर्थात् अपने जीवन की प्रत्येक वृत्ति-प्रवृत्ति पर यह विचार कर सकूं कि "देख रहा है मेरा नाथ, रहता है जो सदा साथ" बस यही तो प्रार्थना है, हे परमेश्वर! यही तो अभ्यर्थना है, हे जगदीश्वर! यही तो याचना है, हे सर्वेश्वर! स्वीकार करो और मेरा सर्वविध उद्धार करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० ९

ओ३म् त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन् अघायतः।
न रिष्येत् त्वावतः सखा ॥ ऋ० १.९१.८ ॥

अन्वयः—सोम राजन् ! त्वं अघायतः नः विश्वतः रक्ष। त्वावतः सखा न रिष्येत्।

अन्वयार्थः—(सोम राजन्) हे शान्ति के अनुपम स्रोत और संसार के अद्वितीय सम्राट् परमेश्वर ! (त्वं अघायतः नः विश्वतः रक्ष) तुम पाप करना चाहने वाले से हमारी सब ओर से रक्षा करो (त्वावतः सखा न रिष्येत्) तुझ सदृश रक्षक का सखा कभी हिंसित नहीं होता, कभी पीड़ित नहीं होता।

हे सौम्य गुणों से सम्पन्न परमेश्वर ! हे संसार के दिव्य सम्राट् जगदीश्वर ! बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ सोत्साह हम तेरे द्वार पर आये हैं, तेरी शरण में आये हैं, तेरे चरणों में आये हैं और तुझसे प्रार्थना करते हैं, तुझ से याचना करते हैं, तुझ से विनय करते हैं कि तू हमारी सब ओर से रक्षा कर। रक्षा भी उससे कर जो पाप का सदा इच्छुक रहता हो, हृदय से सदा पाप करना चाहता हो; पाप जिसके हृदय में घर कर गया हो, पाप जिस के भीतर समा गया हो और फिर वह धीरे-धीरे उस की नस-नस में व्याप्त हो रहा हो तथा वह अपनी पाप भावनाओं को कार्य रूप में परिणत करने को उद्यत

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता हो। जिस को फिर न अपने धर्म का विचार हो, न अपनी कुल परम्परा का ध्यान हो और न ही अपनी गुरु परम्परा का ख्याल हो, न अपने मां-बाप की शर्म हो, न ही समाज में अपने मान-सम्मान का विचार हो, ऐसे निर्लज्ज, बेशर्म, पापी जन से हे प्रभुवर! तू हमारी सब ओर से रक्षा कर, हमारी सब प्रकार से रक्षा कर।

ऐसा पापी जन, जिस की नस-नस पाप से अभिभूत हो जाती है, ऐसा वह अति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष आदि में अन्धा हुआ-हुआ मानव जहां अपने आप को पाप के गर्त में गिरा कर अपना विनाश कर लेता है वहां अपने सम्पर्क में दूसरे को भी धूल में मिला देता है। स्वयं तो वह डूबता ही है पर अपने साथ वाले को भी साथ ले डूबता है, स्वयं तो वह समाज में सब की दृष्टि में गिर जाता ही है पर साथ में दूसरे को भी घसीट लेता है, स्वयं तो वह बर्बाद होता ही है पर दूसरे को भी वह अपने साथ बर्बाद कर देता है, तथा स्वयं तो वह अपना मुंह काला कर ही लेता है पर साथ में दूसरे को भी वह उज्ज्वल नहीं रहने देता, स्वयं तो वह कहीं का रहता ही नहीं, पर दूसरे को भी वह कहीं का रहने नहीं देता, इत्यादि।

ऐसे पापीजन के सहस्रों का धन लूट लेने पर

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी, सहस्रों पर डाका डाल लेने पर भी उसके अपने घर में तो उजाला होता ही नहीं है पर हां जिसके घर में उजाला था उसका भी वह दीपक बुझा देता है। प्रभुदेव! ऐसे पापीजन से, ऐसे ही दुराचारी जन से, ऐसे ही हिंसक जन से, ऐसे ही क्रोध में आग-बबूला हुए-हुए पापी जन से, ऐसे लोभ में अन्धे होकर विवेक शून्य धर्माधर्म भूले हुए पापी जन से, काम में पागल हुए-हुए पापीजन से, अहंकार में दूसरों को कुछ न समझने वाले पापी जन से, ईर्ष्या और द्वेष से सदा जलते-भुनते हुए कुछ का कुछ कर डालने वाले पापी जन से तू हमारी रक्षा कर, तू हमें बचा।

हे जगत् पर शासन करने वाले, सत्पुरुषों के हृदयों में पवित्रता और आनन्द के स्रोत बहाने वाले परमेश्वर! हम क्यों आपसे प्रार्थना करते हैं? क्यों आपसे याचना करते हैं? क्यों आपसे विनय करते हैं? इसीलिए कि (त्वावतः सखा न रिष्येत्) तुझ समान रक्षक का मित्र कभी हिंसित नहीं होता, कभी पीड़ित नहीं होता।

हे सोम राजन्! जो तुझ को अपना सखा बना लेता है वा तेरा स्वयं सखा बन जाता है, तुझ सम अपने गुण कर्म स्वभाव बना लेता है, तुझ सम

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने में सत्य और न्याय आदि को धारण कर लेता है, फिर वह तेरा अपना ही बन जाता है और तू उसका ही बन जाता है। तब वह न तुझ बिन रह पाता है और न तू उस बिन रह पाता है। ऐसे तुझ समर्थ का सहयोग पाने पर, तुझ सशक्त का संरक्षण पाने पर, तुझ बलिष्ठ का बल पाने पर, तुझ ज्ञानी का ज्ञान पाने पर, तुझ प्यारे का प्यार पाने पर भला फिर किस की हिम्मत है जो उसकी कुछ हानि कर सके, उस को दुःखी कर सके, उस को पीड़ा पहुंचा सके, उस को सन्तप्त कर सके। फिर भला किस की क्या मजाल जो उस को अपने लक्ष्य से, अपने उद्देश्य से, अपनी पवित्रता से, न्याय से, सत्पथ से च्युत कर सके। क्योंकि तब वह तो अपने सखा जगत् सम्राट् के संरक्षण में रहता है, जिस के संरक्षण में जाने पर फिर कोई उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। "जाको राखे सांईयां मार सके न कोय।"

वह भी फिर सब प्रकार से निर्भय हो जाता है, निडर हो जाता है, क्योंकि उसने तो उसकी शरण ली है जो राजाओं का राजा है, उसने तो उस से रक्षण-संरक्षण की प्रार्थना की है जिस से सब घबराते हैं, सब थर्राते हैं। उसने उस प्रभु से रक्षा की याचना की है जो रक्षकों का भी रक्षक है, उसने तो उस

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव से भिक्षा मांगी है जो दाताओं का भी दाता है, उसने तो उसकी शरण ली है जो शरण्यों की भी शरण है।

हे प्रभुवर ! इस आशा और विश्वास पर हम तुझ से प्रार्थना कर रहे हैं, तुझ को पुकार रहे हैं, तुझ को एक टक निहार रहे हैं कि तू हम पर भी कभी अपना अनुग्रह करे, तू हम पर भी कभी अपनी कृपा करे।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय सं० १०

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥ यजु० ३६.१२ ॥

अन्वयः—देवी आप अभिष्टये पीतये न शं भवन्तु । शंयोः नः अभिस्रवन्तुः ।

अन्वयार्थः—(देवीः आपः) दिव्य गुणों का भण्डार सर्व व्यापक परमेश्वर (अभिष्टये पीतये) इष्ट सुखों की पूर्ति के लिये और पूर्णानन्द के भोग के लिये (नः शं भवन्तु) हमारे लिये सुखकारी होवे । तथा ([1]शंयोः) जिससे रोगों का शमन होता है और भयों का निवारण होता है ऐसे आधि-व्याधि-शामक एवं भयनिवारक सुख विशेष की हम पर सब ओर से वर्षा करे ।

हे प्यारे परमेश्वर ! जैसे हिमालय से दिव्य-निर्मल जल धारायें बहती हैं और हमारे इष्ट सुखों की सिद्धि के लिये हमारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये जब हमारे खेतों को, हमारे उद्यानों को, हमारी वाटिकाओं को तृण, अन्न आदि खाद्य-पदार्थों से तथा फल-फूलों से भर देती हैं, सब प्रकार से हरा-भरा कर देती हैं तो तब वह दृश्य हमारे लिए महोत्सव रूप हो जाता है । इतना ही नहीं ये धारायें हमारे वस्त्र,पात्र आदि धो-धा

१—शंयोः—शमनंच रोगाणां यावनं च भयानाम् ।
—निरुक्त अ० ४, पा० ३ ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर शुद्ध-पवित्र बना देती हैं, पसीने और मैल से मलिन हमारे शरीरों को नहला-धुला कर निर्मल बना देती हैं, हमारी देहों की तपश मिटा देती हैं। परन्तु ये ही धारायें जब हमारे पान करने के लिये अपना उदक समर्पित करती हैं तो तब हमारी प्यास बुझ जाती है और सब प्रकार से हम तृप्त हो जाते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं, खिल जाते हैं।

ऐसे ही हे दिव्य गुणों की खान सर्वव्यापक महान परमात्मन् ! हमें इष्ट सुखों से सम्पन्न एवं खुशहाल करने के लिए नाना प्रकार के सुख-सौभाग्यों के स्रोत तुझ से प्रवाहित होते रहते हैं जिन्हें पाकर हम बहुत सुखी होते हैं। परन्तु जिस समय हम इन सब पदार्थों का सेवन करके भी शान्त नहीं होते, तृप्त नहीं होते, आनन्दित नहीं होते, तो हम (पीतये) आध्यात्मिक रूप से तेरे दिव्य रस का अर्थात् ब्रह्म-रस का पान करने के लिए ध्यानावस्थित होते हैं तो तू तब हमें ऐसा शान्त कर देता है, ऐसा तृप्त एवं आनन्दित कर देता है कि फिर आँखें खोल कर इन तेरे प्रदान किये हुए बाह्य इष्ट पदार्थों को, सुख सौभाग्यों को निहारने को भी हमारा जी नहीं करता।

हे सुख-शान्ति एवं आनन्द के अनुपम स्रोत ! तेरा यह अद्भुत रस हमें सच-मुच ऐसा तृप्त कर देता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि फिर हम सदा ही यह चाहने लगते हैं कि जिससे सब रोगों का शमन होता है, सब आधि-व्याधियों की समाप्ति होती है और सब भयों की निवृत्ति होती है, ऐसे उस अनुपम रस की, उस अद्वितीय सुख की, उस दिव्य आनन्द की हम पर सब ओर से वर्षा कर।

हे शान्ति स्वरूप सर्वव्यापक प्रभुदेव! तू इतना उदार है, इतना कृपालु है कि इधर हमारी प्रार्थना होती है और उधर तू हम पर चहुँ ओर से वा सब ओर से स्नेह की, अद्वितीय सुख की, दिव्य आनन्द की, अपने परम प्यार और आशीर्वाद की वर्षा आरम्भ कर देता है। उस समय हमें ऐसा लगता है कि तू केवल भीतर से ही अपनी कृपा का स्रोत नहीं बहा रहा है प्रत्युत बाहर से भी पत्ते-पत्ते, डाली-डाली, फूलों की पंखुड़ी-पंखुड़ी, तितलियों के पर-पर, सर्वप्राणियों की चहु-चहु, कोकिल की कू-कू, झरने की झर-झर में, सरित-सरोवरों की सर-सर और सम-सम में सर्वत्र तू ही हमें दिखाई देता है, सर्वत्र तू ही हमें सुनाई देता है, सर्वत्र तू ही हमें अनुभव में आता है, और सब ओर से अर्थात् भीतर और बाहर से तू ही अपने प्यार और आशीर्वाद की, सुख और सन्तोष की, तृप्ति और आनन्द की वर्षा करता है। उस समय सचमुच हम

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहाल हो जाते हैं और तुझ में ऐसे खो जाते हैं कि फिर हमें अपने आपे का भी भान नहीं रहता क्योंकि उस समय सब प्रकार से तू हमारा हो जाता है और हम तुम्हारे हो जाते हैं।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिरो३म् ॥



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रद्धा साहित्य प्रकाशन" द्वारा श्रद्धापूर्वक दान देने वाले महानुभावों के सहयोग से लेखक की प्रकाशित पुस्तकें—

१- प्रार्थना सुमन, भाग—१	प्रथम-संस्करण		११००
२- कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय	प्रथम	,,	२०००
	द्वितीय	,,	२०००
३- वेद सुधा, भाग—१	प्रथम	,,	२०००
४- विदुर जी की दृष्टि में बुद्धिमान् कौन ? भाग—१	,,	,,	२०००
५- महान् विदुर के महान् उपदेश भाग—१	,,	,,	२०००
६- विनय-सुमन, भाग—१	,,	,,	२+४०००
७- प्रार्थना प्रदीप, भाग—१	,,	,,	२०००
८- प्रार्थना प्रसून, भाग—१	,,	,,	२०००
९- प्रार्थना सुमम, भाग—१	,,	,,	२०००
१०- वेद-सुधा, भाग—२	,,	,,	२०००
११- विनय-सुमन, भाग—२	,,	,,	२०००
१२- अनन्त की ओर	,,	,,	२०००
१३- वैदिक पुष्पांजलि भाग—१	,,	,,	२०००
१४- वैदिक गृहस्थाश्रम	,,	,,	३०००
१५- प्रभात-वन्दन	,,	,,	३०००

आगे प्रकाशित होने वाली पुस्तकें—

१- विदुर जी की दृष्टि ..भाग-२
२- प्रार्थना-प्रदीप, भाग—२
३- प्रार्थना-प्रसून, भाग—२
४- यज्ञ-सुधा, भाग—१
५- शयन विनय
६- वैदिक पुष्पांजलि—२,३,४
७- याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद
८- नचिकेता के तीन वर
९- वैदिक आदर्श परिवार
१०- वेदोपदेश, भाग—१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

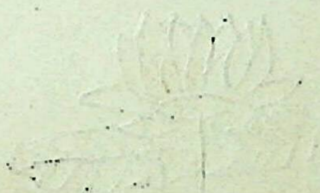
श्रद्धा साहित्य प्रकाशन में दान दाताओं की सूची

संघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर	५०.००
महेन्द्र मुनि देवयति वानप्रस्थाश्रम	१० ००
माता पदमावती महाजन D-95 आनन्द निकेतन नई-दिल्ली	५१.००
श्री देवीप्रसाद मस्करा, अमरतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता	२००.००
श्री चैनमुनि गांधी चान्दपुर	१०.००
माता कस्तूरी देवी चन्दौसी	२१.००
बहिन कुमार कुमुद अग्निहोत्री झांसी	१०.००
ओम प्रकाश आर्य चांदपुर	१०.००
महात्मा बलदेव जी अध्यक्ष वेद मन्दिर चांदपुर	१००.००
महिला आर्य समाज चन्दौसी	२१.००
फुटकर दान	३४.००
श्री शांति स्वरूप जी चन्दौसी	२१.००
माता विमला देवी आर्या चन्दौसी	२१.००
डा० हरिराम जुनेजा बिलासपुर	२५.००



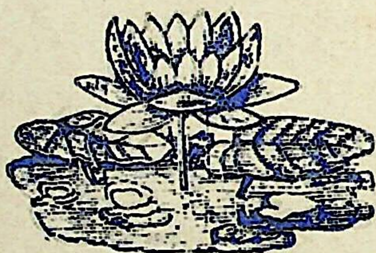
CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शक्ति प्रेस (नहर पुल) कनखल

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.